

राम रिझाया थारी आत्मा रीझे, दुनिया रिझेगी रे मिठो बोल्या से ।  
घर में गाँठ हो ज्याय पर घर डोल्या से ॥

आदर भाव गुणा से मोटा, नहीं करया कर देखो जी ।  
दुश्मन झुकज्या उनके आगे, तुरंत फुरत लेवे लेखो जी ।  
विष अमृत हो ज्याय मिठो बोल्या से, ।  
घर में गाँठ हो ज्याय पर घर डोल्या से ॥

खेत की खातिर बाड लगाई बाड खेत ने खावे जी ।  
पर हाथा कोई चीज मंगाई, बा पूरी कद आवे जी ।  
मनका विश्वास जाय पाछे तोल्या से ।  
घर में गाँठ हो ज्याय पर घर डोल्या से ॥

मित्र करो तो राखो मित्रता, मित्र फल ना चाखो जी ।  
जे मित्र में अवगुण हो तो, परदे भीतर राखो जी ।  
दुनिया हँसेगी परदों खोल्या से ।  
घर में गाँठ हो ज्याय पर घर डोल्या से ॥

भरम भरम में सब कोई भरम्या, भरम भेद न पायो जी ।  
मिनख जमारो बन्दा एलो मत खोवे, श्याम बड़ो जस गायो जी ।  
कर तेरो कल्याण सांचो बोल्या से ।  
घर में गाँठ हो ज्याय पर घर डोल्या से ॥

जय श्री नाथजी की....